शैलेश मटियानी के उपन्यास स्त्री जीवन के असल दस्तावेज

डॉ0 राममूर्ति
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय
चित्रकूट सतना (म0प्र0)

लालचन्द विश्वकर्मा
शोध छात्र
हिन्दी (जे0आर0एफ0)
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय
चित्रकूट सतना (म0प्र0)

शैलेश मटियानी के उपन्यासों में नारी की यथार्थ स्थिति का निरूपण हुआ है। मुख्यतः इनके उपन्यासों में यह देखने को मिलता है कि किस प्रकार एक स्त्री वेश्या जीवन जीने के लिए विवश हो जाती है। जीवन यापन के जितने भी मार्ग हैं वह सब कैसे उसके लिए बंद हो जाते हैं और अंत में वह मजबूर होकर इस कुमार्ग को अपनाकर जीवन जीते हुए अपनी जीवन लीला समाप्त कर देती है।

'गोपुली गफूरन' उपन्यास में मटियानी जी ने पहाड़ की जिन्दगी व्यतीत करने वाली नारियों के हीनभाव एवं संत्रस्त मनः स्थिति का चित्रण किया है। ''कंगाली और हाहाकार से भरी जिन्दगी को ही नहीं बल्कि पहाड़ की जाने हजारों औरतें कैसा नरक काटती हैं।''[1] रतना राम की अनुपस्थिति में गोपुली को अभावों, भूख और मौत की संत्रास स्थिति से गुजरना पड़ता है और साथ ही वह हीनता से ग्रस्त होती है। सद्दू मियां गोपुली बनी गफूरन की हीन ग्रस्तता की स्थिति इन शब्दों में व्यक्त करते हैं ''तुझे भी गोपुली उर्फ गफूरन देने वाले ने जिन्दगी क्या दी है, मछुवारों का जैसा जाल रच दिया है।''[2] अतः गोपुली हीन भाव से ग्रस्त होकर पागलपन की हद तक पहुँच जाती है। लेखक द्वारा 'कबूतरखाना' उपन्यास में नीलाम्बरी की हीनता को यथार्थ के साथ उभारा गया है– ''पागलपन भी अपने आप में कितना रहस्यमय, कितना मुखर अनुभूतिपूर्ण होता है। पागलपन की स्थिति तक पहुँचने के लिए मनुष्य को जीवन जीने की

कितनी कंकरीली, पथरीली, गहरी खाइयों, घाटियों से गुजरना पड़ता है। अन्तर्द्वन्द्व के कितने प्रशस्त विराट मरूप्रदेश में बिना थैली–गद्दी के ऊँट की तरह भटकना पड़ रहा है।''[3]

'चौथी मुट्ठी' उपन्यास में मोतिमा और कौशिला पति सास एवं ससुर के द्वारा उपेक्षित एवं तिरस्कृत है। वह प्रेम एवं स्नेह की भूखी है। उनके मस्तिष्क में पति, सास व ससुर का उसके प्रति किया गया अन्याय व तिरस्कार कुण्ठा बन कर समा गया है। इस हीनभाव के परिष्कार व रेचन के लिए वह घात डालने गोल्ल देवता के दरबार में चितई जाती है। ''गोल्ल देवता हो। तुम्हारी ही दरबार में हाजिर होने की तैयारी कर रही हूँ। बस अब मुझ दुखियारी और होते हुए खसम–बेटों के लावारिस और का तुम्हारे सिवा कोई पालनहार है भी नहीं। कर देना परमेश्वर बाल–चीर के इन्साफ कर देना।''[4]

शैलेश मटियानी ने 'कबूतरखाना' में बम्बई परिवेश तथा किस्सा नर्मदा बेन गंगूबाई' उपन्यासों में सम्पूर्ण यथार्थता के साथ उभारा है। 'किस्सा नर्मदा बेन गंगूबाई में नारी की स्थितियों को सेठों की जिन्दगी के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है। नारी जिस दिशा में जाती है लेकिन परिस्थितियों और प्रतिबिम्बों का बंवडर उसे विपरीत दिशा में धकेल देता है। लेखक ने बम्बई के शहरी जीवन में व्याप्त उन सेठों की जिन्दगी को अभिव्यक्ति प्रदान की है जो अपनी काम–वासनाओं के कीड़ों को शांत करने के लिए स्त्री गमन को बड़ी ही आतुरता के साथ स्वीकार करते हैं। नगीना भाई सेठ स्थूल है किन्तु अपने अशक्त शरीर के अन्दर पैठे कामुकता के कीड़ों को बहलाने के लिए हसीना बाई के कोठों पर पर जाता है। जहाँ नारी केवल वस्तु बनकर रह जाती है। जहाँ सम्बन्धों में संवेदना का अभाव हो जाता है– ''धीरे–धीरे नर्मदा बेन मर्यादा और परिस्थितियों की बंदिशों में बँधी–बँधी अपने रूप यौवन के उद्दाम उत्ताल ज्वर को समेटे रहने की आदी हो गई। उसने नगीना भाई जैसे सेठों के घरों में हीरे–मोती और सोने की

हथकड़ियों से बँधी रहने वाली और अतृप्त सेठानियों की तरह अपने रूप यौवन की हर माँग को बहलाने–ठुकराने का नया साधन अपनाया।''[5] बम्बई परिवेश के उच्च घरानों की विसंगतियों के परिवेश को बड़े यथार्थ ढंग से नर्मदा बेन के माध्यम से रेखांकित किया है। वह न चाहते हुए भी वेश्यावृत्ति का शिकार होती है। वेश्या जीवन उनकी विवशता बन चुकी है। ''हम सेठानियाँ कहलाने वाली औरतें, निठल्ली बैठी रहती हैं काम के नाम पर आराम करने के सिवा कुछ नहीं होता है और कुछ करने की प्रवृत्ति प्रबल होती है। गरीब और मध्यम वर्ग की गृहिणी को कभी देखना, कैसी कर्मठ होती है? सेठों के पास इतना धन होता है फालतू कि उससे वो अपनी तृप्ति और ऐय्यासी के लिए औरतों और घर की पोल बाहर न जाए..... इसलिए अपनी औरतों के लिए भाड़े का मर्द .....पैसा कितना कमीना बना देता है, इन्सान को। गरीब क्या जाने, कि दौलत के स्वामी जीवन में कैसी जघन्यताओं और कुत्साओं से घिरे रहते हैं।''[6] अतः कहने का भाव यह है कि सेठ लोगों को अपनी ऐय्यासी के लिए नारी को पैसे का लाभ देकर उन्हें वेश्या बनने के लिये मजबूर कर देते हैं।

शैलेश मटियानी ने वेश्यावृत्ति के लिए लिप्त नारियों की करूण पुकार उनकी विवशताओं को मार्मिक अभिव्यक्ति दी है वहीं उस समाज की वास्तविकता को भी यथार्थ के धरातल पर व्यक्त किया है। जहाँ एक मजबूर लड़की को अपनी बहन–सा मानकर एक रोटी देना भी किसी को कबूल नहीं। समाज उसे हमेशा हिकारत भरी दृष्टि से देखता है। अपनी परिवार की जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिये वह इस कीचड़ में लिप्त होती है और अनेक बीमारियों से युक्त अपने जीवन का प्राणांत करती हैं। उन्होंने 'कबूतरखाना' उपन्यास के माध्यम से बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। गणपत के शब्दों में–पर वह खूबसूरती, वह तेज मिजाजी, वे इशारे सब न जाने कहाँ चले गये थे। हड्डियों का एक ढ़ाँचा था, जिस पर साँसो की बिजली

ज्यों–त्यों सरसरा रही थी।.....फिर रो पड़ी आप नहीं मेरा वक्त बोल रहा है बाबू! खैर, उस दिन दो मिनट चूमने के 13 रूपये दे गये थे। आज दो घंटे तक चूम लो, दवा की तरह आने देना। मुँह अभी बदसूरत तो नहीं हुआ हैं न? जिसम में जरा भी ताकत नहीं रही है कि ग्राहक की मस्ती झेल सकूँ फिर भी अभी अंधेरी गली में जाके एक रूपये में..... ।''[7] लेखक ने वेश्यावृत्ति में लिप्त नारियों की व्यक्तिगत परिस्थितियों पर ही प्रकाश नहीं डाला है बल्कि इस समस्या के मूल में कार्यरत उस आश्रमों के क्रिया कलापों तथा दलालों के असामाजिक कुचक्रों पर भी यथार्थ दृष्टिपात किया है। इन आश्रमों की आड़ में पनपने वाली वेश्यावृत्ति के यथार्थ को भी उजागर किया है। दलालों का असामाजिक वर्ग नारी को इस दलदल में उतरने के लिये विवश करता है। 'मंजिल–दर मंजिल' उपन्यास में मुन्ने खाँ नबाव के माध्यम से उस वर्ग की मनोवृत्ति को विश्लेषित किया है जिनके कारण नारी की अस्मत एक व्यवसाय है चाहे वह अपनी हो या परायी– ''फिर चाहे मैंने नकली नवाबी ओढ़कर औरतों से अस्मतफरोशी करवाई या मैं अपने चचाजाद भाई अनवर अली की तरह अपनी ही बेगमों से अस्मतफरोशी करवाता– मेरे लिए कोई फर्क नहीं पड़ सकता था। जैसे किसी बहुत ऊँची मीनार पर से गिरते हुए आदमी के लिए यह बात कोई कीमत नहीं रखती कि वह किस तरफ को गिर रहा है– ठीक ऐसे ही, अपने इन्सानी अखलाक और जज्बातों से नीचे गिरते हुए आदमी के लिए भी यह बात कोई अहमियत नहीं रखती कि वह दूसरों की बेटियों से अस्मतफरोशी करवा रहा है या अपनी बेटियों से।''[8] वेश्यावृत्ति को मुख्य समस्या मानते हुए लेखक ने वेश्याओं के प्रति सदैव उदार बनने की कोशिश की है। कभी घृणा नहीं आने दी। सदैव सहानुभूति प्रकट करते हैं, क्योंकि वेश्याएँ हो या कोई भी नारी इस पेशे को मन से स्वीकार नहीं करती हैं, इसके पीछे हमेशा ही मजबूरियाँ होती हैं चाहे वो आर्थिक हों या और किसी तरह की। नारी के शोषण का मूल कारण असमानता है। इसी आर्थिक असमानता के कारण नारी खिलौने की तरह बाजार में बिकती आयी है। टूटती

हैं, मिट्टी में मिल जाती हैं, वह भी और उसका मातृत्व भी। इंसान की इंसानियत भी दफन कर लेता है, नारी का यह नर्क प्रस्थान। इन अबलाओं को इन गटरनुमा जिन्दगी में धकेलने के लिये एक दो नहीं, अपितु सारा समाज उत्तरदायी है।

हिन्दी साहित्य के विविध साहित्यकारों द्वारा साहित्य में इस समस्या को उठाया गया है। समाज में वेश्यावृत्ति कई रूपों में विद्यमान है। शैलेश मटियानी ने वेश्यावृत्ति के विविध रूपों को उद्घाटित किया है। वेश्यावृत्ति अपनाने के हमारे समाज में अनेक कारण रहे हैं। मुख्य रूप से यहाँ की सामाजिक तथा आर्थिक स्थितियाँ मुख्य कारण हैं। जीवन यापन करने के लिए आर्थिक अभाव, सामाजिक भय, पुरूष की कामलोलुपता, असफल दाम्पत्य प्रेम आदि वेश्यावृत्ति के कारण रहे हैं। इन सब का चित्रण लेखक ने अपने उपन्यासों में विविध स्थलों में बरवूबी किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. शैलेश मटियानी, पाप–मुक्ति तथा अन्य कहानियाँ में संगृहीत 'गोपुली गफरन, पृ0 142 सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।
2. वही पृ0 144।
3. शैलेश मटियानी, 'कबूतरखाना', पृ0 130, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।
4. शैलेश मटियानी, 'चौथी मुट्ठी' पृ0 5,6 आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली।
5. शैलेश मटियानी, 'किस्सा नर्मदा बेन गंगूबाई', पृ0 19, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।
6. शैलेश मटियानी, 'किस्सा नर्मदा बेन गंगूबाई', पृ0 30, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।
7. शैलेश मटियानी, 'कबूतरखाना', पृ0 49, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।
8. शैलेश मटियानी, 'मंजिल–दर– मंजिल', पृ0 119, किताब महल, 119 इलाहाबाद।